पूर्व सोवियत संघ से भारत के सम्बन्ध : 1947 से 1964 तक

*डॉ. मनोज कुमार सिनसिनवार

शोध सारांश

आल्मा आटा की घोषणा (दिसम्बर 1991) से पूर्व का यू.एस.एस.आर. द्वितीय विश्व युद्ध के बाद महाशक्ति के रूप में उभरा और शीत युद्ध की अत्यन्त तनाव भरी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में एक गुट का नेतृत्व करने के बाद दिसम्बर, 1991 में 15 स्वतन्त्र राज्यों में बंट गया। आजादी के बाद 1947 से 1964 के काल को भारत में नेहरू काल के नाम से भी जाना जाता है। साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद तथा फासिस्टवाद के घोर आलोचक पं. नेहरू वैदेशिक सम्बन्धों के क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा, गुट निरपेक्षता, मध्यस्थता द्वारा आपसी विवाद निपटाना, पराधीन राष्ट्रों को आत्म–निर्णय का अधिकार, मित्रता तथा समानता के पक्ष–पोषक थे। हमारे संविधान का अनुच्छेद–51 भी इन्हीं सिद्धान्तों से साम्यता रखता है। असल में पं. नेहरू भारतीय विदेष नीति के चितेरे थे। भारत अभी–अभी अंग्रेजी दासता और शोषण से मुक्त हुआ था तथा भारत के सामने सबसे बड़ा प्रश्न आर्थिक पुनर्निर्माण एवं विकास का था। यह महत्वपूर्ण और महान कार्य शान्ति के माहौल में ही सम्भव था। अतः नेहरू ने असंलग्नता की नीति अपनाई जिसकी प्रासंगिकता पर विद्वानों में मत–वैभिन्य है।

1927 में बुसेल्स में पीड़ित देशों की कांग्रेस के बाद नेहरू सोवियत रूस गए तथा अपनी पुस्तक 'सोवियत रशिया' में उसका विशद वर्णन किया है। इस यात्रा से उनको स्वतन्त्रता के संघर्ष को अन्तर्राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में समझने का अवसर प्राप्त हुआ और उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि स्वतन्त्रता प्राप्ति की राजनीतिक इच्छा के साथ–साथ भविष्य में एक न्यायनिष्ठ सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था के निर्माण का संकल्प भी व्यक्त होना चाहिए। सोवियत संघ में उन्होंने सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था के एक नवीन स्वरूप को क्रियान्वित होते देखा। वे वहाँ के योजनाबद्ध विकास की पद्धति और समतावादी व्यवस्था से अत्यधिक प्रभावित हुए। उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि सामाजिक स्वतन्त्रता तथा एक समाजवादी व्यवस्था के बिना, न तो देश की और न व्यक्ति की ही कोई अधिक उन्नति हो सकती है। सोवियत रूस ने मुझे अत्यधिक आकृष्ट किया और मैंने अनुभव किया कि वह संसार को आशा का एक नवीन सन्देश दे रहा है। 1928 में जब वे भारत लौटे तो सोवियत संघ के प्रयोगों से अत्यधिक प्रभावित थे। जब उन्होंने समाजवादियों जयप्रकाश नारायण, नरेन्द्र देव तथा एन.जी.रंगा के साथ घनिष्ठतापूर्वक काम करना शुरू किया तो कांग्रेस के भीतर विरोधाभास पैदा हो गया। नेहरू के इस रूख से चिन्तित होकर पटेल व राजेन्द्र प्रसाद वर्धा में गांधीजी के पास गए तथा नेहरू के रेडिकल तेवरों पर अंकुश लगाने को कहा। इसके बाद नेहरू व गांधी में आपस में पत्र व्यवहार हुआ।

1947 के बाद भारत–सोवियत सम्बन्धों का विकास नवीन समसामयिक राजनैतिक धरातल के आधार पर हुआ। दोनों देशों के अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश, क्षेत्रीय बाध्यताएँ तथा द्विपक्षीय हितों के अनुरूप ही इनके सम्बन्धों का विकास हुआ। जोसेफ स्टालिन (1940–1953) के समय सोवियत संघ के साथ भारत के सम्बन्ध बहुत घनिष्ठ नहीं थे। इसका

कारण स्टालिन का सन्देह व अविश्वास था। वहीं दूसरी ओर भारत में भी सोवियत मार्क्सवादी तन्त्र तथा निरंकुश एक दलीय व्यवस्था के प्रति कुछ नेताओं एवं नौकरशाहों में शंका रही है। परन्तु इन कुछ नेताओं के विपरीत नेहरू सदैव सोवियत संघ के साथ घनिष्ठ सम्बन्धों के पक्षधर रहे।

आजादी से दो दिन पूर्व (13 अगस्त, 1947) भारत की विशेष राजदूत विजयलक्ष्मी पण्डित ने सोवियत दूतावास का अधिभार सम्भाला इसके विपरीत सोवियत राजदूत ने 1 जनवरी, 1948 को कार्यभार सम्भाला। इन दो वर्षों के दौरान पंडित को उन्होंने कभी मिलने का समय नहीं दिया। सम्भवतः इसका कारण स्टालिन की नजर में भारत की आजादी के स्वरूप को गैर क्रान्तिकारी मानना तथा स्वतन्त्रता के बाद भारत का राष्ट्रमण्डल देशों का सदस्य बने रहना रहा हो। परन्तु कुछ मुद्दों पर दोनों में समानताएं भी थी। स्टालिन के अन्तिम तीन–चार वर्षों में सहयोग का पक्ष भी उजागर हो गया था। इस सहयोग का कारण भार का 1949 में साम्यवादी चीन का समर्थन करना तथा कोरिया संकट (1950) के समय अपनाई गई भारत की नीति था। इसी कारण सोवियत संघ ने 1950–51 में भारत में आई बाढ़ के समय गेहूँ भेजा तथा कष्मीर मुद्दे पर यू.एन.ओ. में भारत के दृष्टिकोण की आलोचना नहीं की। मृत्यु से पहले स्टालिन ने भारत के राजदूत सर्वपल्ली राधाकृष्णन से भी बातचीत की।

स्टालिन की मृत्यु के बाद भारत एवं सोवियत संघ के मध्य सक्रिय सहयोग की राजनीति का पर्दापण हुआ। प्रधानमंत्री जार्जी मैलन्को (1953–55) ने भारत के शान्ति प्रयासों की सराहना की। इसके बाद 20वें साम्यवादी दल के सम्मेलन में निकिता खुश्चेव द्वारा साम्यवादी विचारधारा में परिवर्तन करके 'शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व' के सिद्धान्त की स्थापना की। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में इस समय कई परिवर्तन हुए जिससे दोनों देशों के सम्बन्ध अधिक घनिष्ठ हुए। 1954 में अमेरिका ने एशिया को शीत युद्ध में शामिल करने के लिए तथा सोवियत प्रभाव को रोकने के लिए दो सैनिक गठबंधन सीएटो (दक्षिण–पूर्व एशिया संधि संगठन) तथा सेन्टो (मध्य एशिया संधि संगठन) बनाए जिनका दोनों देशों ने भरपूर विरोध किया। चीन के साथ समझौते में पंचशील के सिद्धान्तों को सोवियत संघ ने सराहा।

दिसम्बर, 1955 में खुश्चेव (1953–1964) महासचिव, 1958–64 पीएम एवं निकोलाई बुल्गानिन (1955–58 पीएम) ने अपनी भारत यात्रा के दौरान कश्मीर की जमीन से ही भारत के दृष्टिकोण का समर्थन किया तथा इस उपमहाद्वीप के विभाजन को साम्राज्यवादी ताकतों का षडयन्त्र बताया। इसी अवसर पर उन्होंने अपने आर्थिक एवं वैज्ञानिक अनुभवों को भारत से साझा करने की घोषणा की।

सोवियत राष्ट्रपति लियोनोद ब्रेझनेव (1960–64) ने 1961 में अपनी भारत यात्रा के दौरान गोवा के सन्दर्भ में भारत के दृष्टिकोण का समर्थन किया तथा सुरक्षा परिषद् में भारत के पक्ष में वीटो के अधिकार का प्रयोग किया। 1955 में सोवियत संघ भिलाई में एक वृहत इस्पात कारखाना लगाने पर सहमत हो गया। 1961 में आणविक ऊर्जा के शान्तिपूर्ण कार्यो के प्रयोग हेतु समझौता हुआ। इन समझौतों के परिणामस्वरूप दोनों देशों के बीच व्यापार में आशातीत वृद्धि देखने को मिलती है। दोनों देशों के मध्य व्यापार 1953 में महज 8.1 मिलियन का था जो 1965 में बढ़ाकर 1753.6 मिलियन पहुॅच गया।

प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने जून, 1955 व सितम्बर 1961 में तथा डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (राष्ट्रपति) ने जून 1960 व सर्वपल्ली राधाकृष्णन (राष्ट्रपति) ने जून, 1964 में सोवियत संघ की यात्रा की। खुश्चेव 1955 व 1961 में भारत आये।

परन्तु उपरोक्त वर्णन से यह समझना या निष्कर्ष निकालना कि दोनों देशों के मध्य कोई समस्या ही नहीं थी गलत होगा। दोनों देशों के मध्य सम्बन्धों में मुख्य तनावपूर्ण मुद्दा भारत–चीन युद्ध (1962) रहा। इस युद्ध के दौरान सोवियत संघ ने न केवल पंचशील के महत्व को नकारा, बल्कि भारत से चीन द्वारा प्रस्तावित प्रस्ताव पर वार्ता शुरू

करने को कहा। पूर्व में निर्धारित समझौते (जून 1962), जिसके अनुसार सोवियत संघ द्वारा भारत को मिग लड़ाकू विमान भेजने थे, का पालन नहीं किा। परन्तु भारत ने भी स्थिति पर संयम रखा। दूसरी ओर क्यूबा के संकट टलने के बाद सोवियत संघ के रूख में बदलाव आया। इसके बाद चीन के साथ उसके असहज सम्बन्ध होने व चीन द्वारा पाकिस्तान से मित्रता बढ़ने के कारण सोवियत संघ भारत के फिर नजदीक आया।

***सह आचार्य**
इतिहास विभाग
महारानी श्री जया राजकीय महाविद्यालय,
भरतपुर (राज.)

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. तिखा, बाली, आनन्द, सेखो : विश्व का प्रादेशिक भूगोल, पृष्ठ 369, न्यू एकेडमिक पब्लिशिंग कं. सं. 2002
2. शर्मा, डॉ. बृजकिशोर व शर्मा डॉ. शैलबाला : समसामयिक भारत (1947–2000) पृष्ठ 176, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
3. चतुर्वेदी, एम.एस. : प्रमुख भारती रजनीतिक विचारक , पृष्ठ 390, कॉलेज बुक हाउस, जयपुर।
4. एन.सी.ई.आर.टी : भारतीय इतिहास के कुछ विषय, भाग–3, पृष्ठ 367
5. रोचे : ए हिस्ट्री ऑफ सोवियत रसिया, भाग–1 पृष्ठ 199
6. एल.फिशर : ए कोल्डवार, वोल्यूम–1, पृष्ठ 291–92
7. डी.एफ.फ्लेमिंग : ए कोल्डवार वोल्यूम–2, पृष्ठ 31–33
8. पार्ल्मर एण्ड पार्किन्स : इंटरनेशनल रिलेशन, पृष्ठ 721
9. एस.एन.धर : इंटरनेशनल रिलेशन एण्ड वर्ल्ड पोलिटिक्स, पृष्ठ 135–136